जलवायु

पा.सं.	अध्याय शीर्षक	कौशल	क्रियाकलाप
10	जलवायु	समलोचनात्मक बोध, समस्या समाधान, प्रभावपूर्ण संचार, निर्णय ले पाना	हमारे त्यौहार विभिन्न ऋतुओं से संबंधित हैं।

अर्थ

भारत की जलवायु मानसूनी है। मानसून शब्द का सम्बन्ध वर्ष भर हवा की दिशाओं के साथ ऋतु परिवर्तन से है। इस कारण भारत में चार प्रमुख ऋतुएं हैं - शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिमी मानसून की ऋतु तथा पीछे हटते हुए मानसून की ऋतु।

मानसून की प्रकृति अनियमित है तथा यह वातावरण की विभिन्न दशाओं से प्रभावित होती है। इसी कारण मानसून किसी वर्ष जल्दी आ जाती है तो कभी देर से आती है। मानसून वर्षा भी एक समान वितरित नहीं होती। यह पूर्व से पश्चिम की ओर उत्तरी मैदानों में तथा पश्चिम से पूर्व की ओर भारत के दक्षिणी भागों में घटती जाती है। देश के कुछ हिस्सों में विनाशकारी बाढ़ आ जाती है तो देश के कुछ हिस्सों में सूखा पड़ने से लोग दु:खी हो जाते हैं।

भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं। ये हैं: स्थान, समुद्र से दूरी, समुद्र तल से ऊंचाई, पर्वत श्रेणियां, धरातलीय पवनों की दिशा तथा ऊपरी वायु धाराएँ।

भारत में अधिकतर वर्षा दक्षिण-पश्चिमी नमी वाली पवनों के द्वारा होती हैं। मुख्य भूमि का हिन्द महासागर की ओर क्रमश: पतला होते जाने से दक्षिण-पश्चिमी मानसून दो भागों में बंट जाती है; अरब सागर शाखा तथा बंगाल की खाड़ी शाखा। किसी स्थान पर कितनी वर्षा होगी यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस स्थान की उसकी स्थिति क्या है। हिमालय भी इन पवनों को रोक कर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और उनको उत्तर की ओर जाने से रोकता है तथा अपनी नमी को भारत में ही वर्षा के रूप में छोड़ने पर मजबूर करता है।

मुख्य बिन्दु

वर्षा के चार स्पष्ट क्षेत्र हैं:

- उच्च वर्षा का क्षेत्र - 200 से. मी. से अधिक। क्षेत्र: पश्चिमी तट, उत्तर पूर्व का उप हिमालयी क्षेत्र और मेघालय की गारो, खासी, जयन्तिया पहाड़ियों का क्षेत्र।
- सामान्य वर्षा का क्षेत्र - 100 से 200 से. मी.। क्षेत्र: पश्चिमी घाट, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार इत्यादि
- कम वर्षा के क्षेत्र 60 से 100 से. मी.। क्षेत्र- उत्तर प्रदेश के कुछ भाग, राजस्थान तथा दक्कन पठार का आंतरिक भाग
- अपर्याप्त वर्षा के क्षेत्र - 60 से. मी. से कम। क्षेत्र: राजस्थान के पश्चिमी भाग, गुजरात, लद्दाख और भारत के दक्षिण मध्य भाग (अध्ययन सामग्री में मानचित्र देखें)

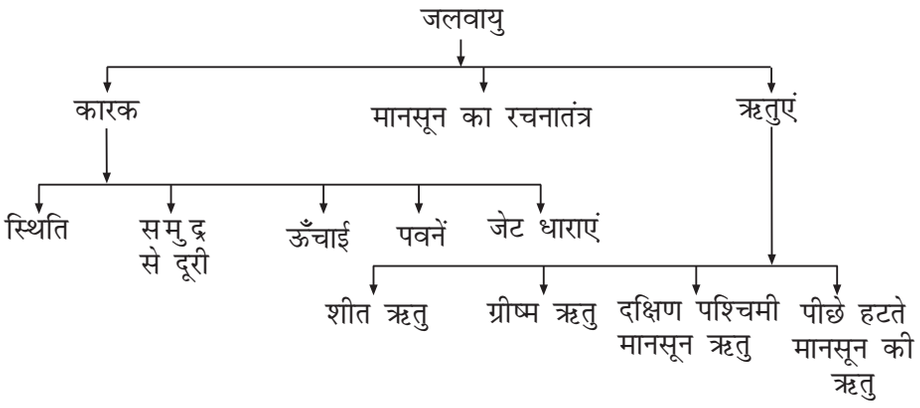

अपनी समझ विकसित कीजिए

मानसून का रचनातंत्र

ग्रीष्म ऋतु में उत्तर भारत के मैदान अत्याधिक गर्म हो जाते हैं। अधिक तापमान से वायु गर्म हो जाती है तथा निम्न दाब उत्पन्न हो जाता है। उस निम्न दाब को मानसूनी गर्त के रूप में जाना जाता है। दूसरी ओर हिन्द महासागर पर तापमान अपेक्षाकृत कम होता है परिणामस्वरूप क्षेत्र में उच्च दाब उत्पन्न हो जाता है। वायु दाब के इस अंतर के कारण पवनें उच्च दाब से निम्न दाब की ओर अथवा समुद्र से भूमि की ओर चलनी शुरू हो जाती हैं। इनकी दिशा एकदम विपरीत होती है अर्थात दक्षिण पश्चिम से उत्तरपूर्व चूंकि यह पवनें समुद्र से भूमि की ओर चलती हैं तथा यह नमी लिए होती हैं तो वर्षा करती हैं।

एल नीनो तथा दक्षिणी दोलन भी मानसून को प्रभावित करते हैं।

ऋतुए	महीना	तापमान	वर्षण	त्यौहार जो मानए जाते है
शीत ऋतु	दिसंबर से फरवरी	कम तापमान	तामिलनाडु के तटीय क्षेत्रों के सिवाय कोई वर्षण नहीं	मकर संक्राति, पोंगल, बंसत पंचमी
ग्रीष्म ऋतु	मार्च से मई	उच्च तापमान उष्ण तथा शुष्क पवन "लू"	आम्र वृष्टि (केरल, कर्नाटक) काल वैसाखी (प. बंगाल, असम)	होली, बैसाखी
बढ़ता दक्षिण-पश्चिमी मानसून	जून से सितंबर	गर्म तथा नम	सम्पूर्ण भारत में वर्षा	ओणम (केरल)
पीछे हटते मानसून की ऋतु	अक्टूबर नवम्बर	आर्द्र तथा उष्ण (अक्टूबर गर्मी)	बंगाल की खाड़ी में चक्रवात	दशहरा, दुर्गा पूजा, दीवाली

वैश्विक ताप भी भारत की जलवायु को प्रभावित कर रहा है। ऋतुओं के चक्र में भी विघ्न पैदा हुआ है। विश्व तापन का करण है, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा कार्बनडाईआक्साइड, क्लोरो-फलोरो कार्बन जैसी विनाशकारी गैसों की मात्रा में अधिक वृद्धि। यही समय है कि हम इन सब को रोकें या कम से कम ऐसी क्रियाओं की दर कम करें जिनसे वैश्विक तापमान बढ़ता है।

स्वयं का मूल्यांकन कीजिए

प्र. हमारी सामाजिक सांस्कृतिक क्रियाएं किस प्रकार मानसून से संबंधित है?

प्र. यदि मानसून देर से आए या वर्षा कम हो तो क्या होता है?

प्र. ऐसी मानवीय क्रियाओं की सूची बनाएँ जिनके कारण वैश्विक तापमान बढ़ रहा है।